VOL- XI ISSUE- I JANUARY 2024 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 8.02 ISSN 2349-638x

अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी सिनेमा

प्राचार्य
ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर
राजस्थान आर्य महाविद्यालय, वाशीम

७ जुलाई, १८९५ में बंबई को वाटसन् थिएटर में लुमीयर ब्रदर्स नामक दो फ्रांसीसी अपनी फिल्में लेकर आये थे। इस थिएटर में उनका प्रीमियम हुआ। प्रीमियम करीब २०० लोगों ने देखा। उस जमाने में दो रूपये टिकट बहुत महंगा था। लुमीयर बंधुओं ने भारतीय लोगों को सिनेमा दिखाकर अचंभित कर दिया। बेजान तस्वीरें चलती-फिरती देखकर सभी दंग रह जाते। पत्र-पत्रिकाओं ने भी उनका गुण गौरव किया। फ्रांसीसी सिनेमा को भारत में लोकप्रियता मिली। १९०४ में मणि सेठना ने भारत में पहला सिनेमा घर बनवाया। जो विशेष रूप से फिल्मों के प्रदर्शन के लिए ही बनाया गया था। इस थिएटर में द लाइफ ऑफ क्राइस्ट फिल्म प्रदर्शित की गयी। इस फिल्म से भारतीय सिनेमा के पितामह दादासाहेब फालके को प्रोत्साहन मिला।

जिन लोगों ने भारत में फिल्मों की बुनियाद रखी, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण दादासाहेब फालके हैं। धुंडिराज गोविंद फालके उर्फ दादासाहेब फालके का जन्म ३० अप्रैल, १८७० को महाराष्ट्र में नासिक के करीब त्र्यंबकेश्वर में हुआ था। उन्हें बचपन से ही फोटोग्राफी का शौक था। हाईस्कूल की परीक्षा पास करके वे विदेश में फोटोग्राफी सीखने के लिए गए। वहां से लौटने पर पुरातत्त्व विभाग में नोकरी की। उस समय भारत में फिल्में नहीं बनती थी, लेकिन विदेशी फिल्में दिखाई जाती थीं। फालके जी ने एक विदेशी फिल्म द लाइफ ऑफ क्राइस्ट देखी और उनके जीवन में परिवर्तन आया। दादासाहेब फालकेजी को हिंदी सिनेमा के जनक और पूरी लंबाई के कथाचित्र बनाने का गौरव हासिल है। लुमीयर के फिल्म के एक साल अन्दर ही सखाराम भाटवाडेकर और दादासाहेब फालके ने फिल्म बनाने की कोशिश की थी। यह शूटिंग बंबई में हैसिंग गॉर्डन में आयोजित कि गयी थी। शूटिंग के बाद प्रोसिसिंग के लिए इंग्लैंड भेजी थी। वहां से फिल्म प्रोसेसिंग होकर वापस आयी तो दादासाहेब अपने काम को देखकर खुश हो गये। प्रथम वह फिल्म खुले मैदान में दिखाई उसके बाद उन्होंने अपनी यह फिल्म पेरी थिएटर में दिखाई। टिकट की दर आठ आना से तीन रूपया थी। दादासाहेब ने श्रीकृष्ण के जीवन पर एक सिनेमा बनाने का निर्णय किया था। लेकिन भाई की मौत ने उन्हें तोड़ दिया। उन्होंने अपना कैमरा भी बेच दिया, और फिल्म बनाना बंद किया। सन् १९११ में अनंतराम, पाटकर, दिवाकर ने यह कोशिश जारी रखी। १९२० में बालगंगाधर तिलक की अंत्येष्टि फिल्म बनायी। १९१२ में उन्होंने १००० फुट की एक फिल्म बनाई सावित्री यह धार्मिक फिल्म बनाने की शुरूआत है। श्री नारायण गोविंद चित्रे और आ.पी.चिटणीस और दादासाहेब के निर्देशन में नाटक पुंडलीक सिनेमा बनाया। बंबई में प्रदर्शित किया गया।

हिंदी सिनेमा जिसे बॉलीवुड के नाम से भी जाना जाता है। हिंदी भाषा में फिल्म बनाने का उद्योग है। बॉलीवुड नाम अंग्रेजी सिनेमा उद्योग हॉलीवुड के तर्ज पर रखा गया है। हिंदी फिल्म उद्योग मुख्यतः मुम्बई शहर में बसा है। ये फिल्में हिंदुस्तान, पाकिस्तान और

दुनिया के कईं के दिलों की धड़कन हैं। हर फिल्म में कई संगीतमय गाने होते हैं। इन फिल्मों में हिंदी की हिंदुस्तानी शैली का चलन है। हिंदी और (खड़बोली) के साथ-साथ अवधी, बम्बईया हिंदी, भोजपुरी, राजस्थानी जैसी बोलियां भी संवाद और गानों में उपयुक्त होती हैं। प्यार, देशभक्ति, परिवार, अपराध, भय, ईर्ष्या मुख्य विषय होते हैं।

पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनाने वाले फिल्मकार थे अर्देशिर एम.ईरानी। अर्देशिर ने १९२९ में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म शो बोट देखी और उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर उन्होंने अपनी फिल्म की पटकथा बनाई। उनकी कंपनी ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक् फिल्में बनाई। आमल आरा फिल्म अरेबियन नाईटस जैसी फेंटेसी थी। फिल्म ने हिंदी-उर्दू के मेलवाली हिंदुस्तानी भाषा को लोकप्रिय बनाया। यह फिल्म १४ मार्च, १९३१ को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म ८ सप्ताह तक हाउसफुल चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए निमंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। मगर दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म १० हजार फुट लंबी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तेयार किया गया था।

पहले सम्मानित घराने की युवतियां फिल्मों में नहीं जाती थी। इस पेशे को बहुत बुरा माना जाता था। तब नाचने गानेवालियां ही फिल्मों में काम करती थी। बाद में इसमें परिवर्तन आया और देवकी रानी, दुर्गा खोटे, लीला चिटणीस, ललिता पवार जैसी कुलीत परिवार की युवतियां फिल्मों में आयी। इसके बाद धीरे-धीरे फिल्म कलाकारों को इज्जत मिलने लगी। आज हर नगर हर कोने में फिल्मी कलाकारों के भक्त दिवाने मिल जायेंगे। युवा पीढ़ी तो जैसे फिल्में हाव-भाव को अपनी जीवन शैली बनायी है।

सारांश :

अखिल भारतीय स्तर पर फिल्मों के माध्यम से अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी की अविराम विकास हुआ और लोकप्रियता भी बढ़ी। जब कोई अहिंदी भाषी बनारस, इलाहाबाद या हरिद्वार आदि हिंदी भाषी क्षेत्रों में जाता है तो वह अपनी टूटी, फूटी हिंदी बोलकर अपने खाने-पीने और रहने की सुविधाएं जुटा लेता है, तो इसे हिंदी फिल्मों की देन ही कहा जा सकता है। देश के नक्शे पर ऐसी कोई जगह नहीं होगी जहां हिंदी फिल्में न पहुंचती हों। कमलेश्वर, राही मासूम रज़ा, मनोहर श्याम जोशी, नरेंद्र शर्मा, सलीम खान आदि प्रसिद्ध लेखकों ने हिंदी की छिपी हुई ताकत और सभावनाओं को फिल्में के माध्यम से बाहर निकाला है।

संदर्भ :

१. India Form विकीपीडिया
२. हिंदी सिनेमा का इतिहास - राजेश त्रिपाटी
३. दादासाहेब फालके-रमेश त्रिपाठी
४. मीडिया और हिंदी साहित्य-संपादन-राजकिशोर
५. भारतीय चलचित्र संगीत का इतिहास-सीमा जौहरी
६. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया : बलते आयाम-डॉ. स्मिता मिश्र, डॉ. अमरनाथ अमर
७. बॉलीवुड पाठ-वाणी प्रकाशन
८. पश्चिम और सिनेमा-वाणी प्रकाशन